UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

हिन्दी अनिवार्य

CLASS-XII

मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

हिन्दी (अनिवार्य) (01)

MODEL PAPER (RBSE) 4

कक्षा-XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट | पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खंड 'अ'

1. बहुविकल्पी प्रश्न-

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए-

हर समाज की एक मातृभाषा होती है। उसका अपना विशिष्ट साहित्य होता है। उस भाषा के साहित्य का अध्ययन करके हम उस भाषा-भाषी समाज के बारे में, उसकी सभ्यता और संस्कृति के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। विदेशी भाषा का अध्ययन करना बुरी बात नहीं है। इससे हमारी संवेदना व्यापक होती है, हमारे ज्ञान का विस्तार होता है, हमारे मानवीय दृष्टिकोण में व्यापकता आती है और विचारों में उदारता का समावेश होता है। इस दृष्टिकोण से यदि हम सोचें तो कई मायनों में विदेशी भाषा का ज्ञान बहुत व्यापक सिद्ध होता है। हम जिसे अपना बनाना चाहते हैं, उसकी भाषा का ज्ञान हमारे पास है, तो हम उससे सुगमता से संबंध स्थापित कर सकते हैं। किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के मोह में हम अपनी ही भाषा की उपेक्षा कर दें। भाषा किसी जाति की सभ्यता और संस्कृति की वाहक होती है।

यदि हमारे पास अपनी भाषा का ज्ञान नहीं होगा तो हम अपनी पहचान खो देंगे। अपनी भाषा या मातृभाषा में हृदय बोलता है। हमारा राष्ट्र-हृदय उसमें धड़कता है, इसलिए विदेशी भाषा की अपेक्षा मातृभाषा का महत्व अधिक होता है। एक स्वाभिमानी स्वतंत्र राष्ट्र अपनी भाषा के स्थान पर किसी विदेशी भाषा को शिक्षा या राज-काज की भाषा के रूप में ग्रहण करना किसी दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता। जब तक कोई राष्ट्र अपनी भाषा को नहीं अपनाता तब तक वह स्वावलंबी नहीं बन सकता, विकास नहीं कर सकता। उसकी सारी शक्ति अनुवाद और अनुकरण में ही समाप्त हो जाती है। उसकी मौलिक प्रतिभा कुण्ठित हो जाती है। प्रशासक और जनता के बीच एक गहरी खाई बन जाती है, जिसे पाटने के लिए दलाल बीच में आकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लग जाते हैं। इसलिए कोई विदेशी भाषा चाहे कितनी ही समृद्ध क्यों न हो, उसका चाहे कितना ही व्यापक क्षेत्र क्यों न हो, पर अपनी मातृभाषा के सामने उसका कोई सार्थक महत्व नहीं हो सकता। मातृभाषा चिंतन और मनन की भाषा होती है, परंपरा का वह जीवंत प्रतिबिंब है। संपूर्ण समाज उसी के माध्यम से स्वयं को व्यक्त करता है।,

(i) विदेशी भाषा का ज्ञान क्यों आवश्यक माना गया है? **[1]**

(अ) अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की स्थापना हेतु
(ब) ज्ञान का विस्तार करने हेतु
(स) अपनी संवेदनाओं को व्यापक बनाने हेतु
(द) उपर्युक्त सभी

(ii) गद्यांश के अनुसार, वर्तमान परिस्थितियों में किसे अनिवार्य माना गया है? **[1]**

(अ) विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना
(ब) विदेशी संस्कृति को समझना
(स) मातृभाषा के महत्व को कम आँकना
(द) स्वदेशी वस्तुओं को महत्व देना

(iii) विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें किसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए? **[1]**

(अ) प्राचीन सभ्यता की
(ब) अन्य भाषाओं की
(स) अपनी भाषा की
(द) अपने समाज की

(iv) गद्यांश के अनुसार कोई भी राष्ट्र कब तक विकसित नहीं हो सकता? **[1]**

(अ) जब तक अपनी मातृभाषा को नहीं अपनाता
(ब) जब तक विदेशी भाषा के महत्व को नहीं पहचानता
(स) जब तक विदेशी भाषा को शिक्षा की भाषा के रूप में स्वीकार नहीं करता
(द) जब तक मातृभाषा को विदेशी भाषा की अपेक्षा अधिक महत्व नहीं देता

(v) मातृभाषा के सम्मुख किसका कोई महत्व नहीं हो सकता है? **[1]**

(अ) मनुष्य का (ब) साहित्य का
(स) समाज का (द) विदेशी भाषा का

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

(vi) **संपूर्ण समाज की अभिव्यक्ति का माध्यम किसे माना गया है?** [1]

(अ) जाति व्यवस्था को (ब) विदेशी भाषा को
(स) मातृभाषा को (द) संस्कृति को

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए-

अहा, कौन यह वीर बाल निर्भीक है
कहो भला भारतवासी! हो जानते
यही 'भरत' वह बालक है, जिस नाम से
'भारत' संज्ञा पड़ी इसी वर भूमि की
कश्यप के गुरुकुल में शिक्षित हो रहा
आश्रम में पलकर कानन में घूमकर
निज माता की गोद मोद भरता रहा
जो पति से भी बिछुड़ रही दुर्देव-वश
जंगल के शिशुसिंह सभी सहचर रहे
रहा घूमता हो निर्भीक प्रवीर यह
जिसने अपने बलशाली भुजदंड से
भारत का साम्राज्य प्रथम स्थापित किया
वही वीर यह बालक है दुष्यन्त का
भारत का शिर-यत्न 'भरत' शुभ नाम है।

(vii) **भारत नाम किसके नाम पर पड़ा?** [1]

(अ) कश्यप (ब) भरत
(स) भारती (द) उपर्युक्त सभी

(viii) **भरत ने किस गुरु से शिक्षा पाई?** [1]

(अ) विश्वामित्र (ब) वाल्मीकि
(स) कश्यप (द) परशुराम

(ix) **भरत किसका पुत्र था?** [1]

(अ) दुष्यंत (ब) हरिश्चंद्र
(स) कश्यप (द) विश्वामित्र

(x) **भरत के सहचर कौन थे?** [1]

(अ) साथ पढ़ने वाले (ब) ऋषि पुत्र
(स) शिशुसिंह (द) उपर्युक्त सभी

(xi) **काव्यांश का उचित शीर्षक दीजिए-** [1]

(अ) भारत देश (ब) वीर भरत
(स) वीर बालक (द) दुष्यंत पुत्र

(xi) **भारत का साम्राज्य सर्वप्रथम किसने स्थापित किया?** [1]

(अ) दुष्यंत (ब) कश्यप
(स) शिशुसिंह (द) भरत

2. **निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-**

(i) **.....विचारों के आदान - प्रदान का साधन हैं।** [1]
(ii) **लिखने की विधि ..... कहलाती है।** [1]
(iii) **'शब्द की प्रथमा शक्ति' ..... को कहा जाता है।** [1]
(iv) **"कुत्ते तो भौंकते ही रहते हैं।" वाक्य में ..... शब्द शक्ति है।** [1]
(v) **जहाँ एक या अनेक वर्ण की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति होती है वहाँ ..... अलंकार होता है।** [1]
(vi) **'पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुस, चून।' काव्य-पंक्ति में .....अलंकार है।** [1]

3. **निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए-**

(i) **निम्न पारिभाषिक शब्दों के अर्थ लिखिए-** [1]
A- Barrier - B- Identity -
(ii) **'घोषणा' शब्द के लिए पारिभाषिक शब्द लिखिए।** [1]
(iii) **पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्व किस बात का है?** [1]
(iv) **'सिल्वर वैडिंग' पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य का संबंध किसकी मृत्यु से है?** [1]
(v) **'सिल्वर वैडिंग' कहानी में किस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है?** [1]
(vi) **'जूझ' पाठ आनन्द यादव के किस प्रकार के उपन्यास का अंश है?** [1]
(vii) **दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर कौन-से माने जाते हैं?** [1]
(viii) **जर्मनी का शासक कौन था? उसने किसके माध्यम से लाखों यहदियों को मौत के घाट उतारा था?** [1]
(ix) **'जीवन का सच्चा आनन्द' ऐन फ्रैंक किसमें मानती है?** [1]
(x) **'कविता एक खिलना है फूलों के बहाने' इसका अभिप्राय क्या है?** [1]
(xi) **लेखक ने भारतीय समाज में बेरोज़गारी और भुखमरी का क्या कारण बताया है?** [1]

खंड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में दीजिए-

4. **इन्टरनेट के स्वरूप एवं उपयोग का महत्त्व बताइए।** [2]
5. **एंकर-बाइट किसे कहते हैं?** [2]
6. **'प्रकृति के रख-रखाव के प्रति उदासीन आधुनिक मानव' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए।** [2]
7. **जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं- कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?** [2]
8. **कठोर छत बच्चों को कैसे मुलायम लगती है?** [2]
9. **आंबेडकर की कल्पना का समाज कैसा होगा?** [2]
10. **'पहलवान की ढोलक' कहानी का संदेश क्या है? बताइए।** [2]

खंड 'स'

11. **'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की? तर्कसम्मत उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द)** [3]

अथवा

'सहर्ष स्वीकारा है' कविता का प्रतिपाद्य/ संदेश क्या है? (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

12. **नमक ले जाने के बारे में सफ़िया के मन में उठे द्वंद्व के आधार पर उसकी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द)** [3]

अथवा

'हाय, वह अवधूत आज कहाँ हैं!' ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया हैं। कैसे? (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

13. हरिवंश राय बच्चन का कवि परिचय लिखिए। (उत्तर शब्द सीमा 80-100 शब्द) [4]

अथवा

फणीश्वरनाथ रेणु का लेखक परिचय लिखिए। (उत्तर शब्द सीमा 80-100 शब्द) [4]

14. "यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आपको कहीं नहीं ले जातीं, वे आकाश की तरह अधूरी रह जाती हैं। लेकिन इन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, यहाँ से आप इतिहास को नहीं इसके पार झाँक रहे हैं।" इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है? (उत्तर शब्द सीमा 120 शब्द) [6]

अथवा

'ऐन फ्रैंक कौन थी।' उसकी डायरी क्यों प्रसिद्ध है? 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर महिलाओं के बारे में ऐन फ्रैंक के विचारों पर प्रकाश डालिए। (उत्तर शब्द सीमा 120 शब्द) [6]

खंड 'द'

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-[2+4=6]

नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और ....
जादू टूटता हैं इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा हैं।

अथवा

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया -
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-[2+4=6]

विजयी लुट्टन कूदता-फाँदता, ताल ठोंकता सबसे पहले बाजे वालों की ओर दौड़ा और ढोलों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। फिर दौड़कर उसने राजा साहब को गोद में उठा लिया। राजा साहब के कीमती कपड़े मिट्टी में सन गए। मैनेजर साहब ने आपत्ति की-"हें-हें, अरे-रे! किन्तु राजा साहब ने स्वयं उसे छाती से लगाकर गद्गद होकर कहा- "जीते रहो, बहादुर! तुमने मिट्टी की लाज रख ली!"

अथवा

भारतीय कला और सौन्दर्यशास्त्र को कई रसों का पता है, उनमें से कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है, जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं। यह संसार की सारी सांस्कृतिक परम्पराओं को मालूम है, लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे रस-सिद्धान्त की माँग करता है जो भारतीय परम्पराओं में नहीं मिलता।

17. सचिव, राजस्तरीय पाठ्य - पुस्तक मण्डल की ओर से एक निविदा सूचना का प्रारूप तैयार कीजिए, जिसमें फर्नीचर एवं स्टेशनरी क्रय करने का विवरण हो। [4]

अथवा

जिला कलेक्टर, उदयपुर की ओर से राजस्व सचिव, राजस्थान सरकार को स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति जारी करने हेतु सरकारी पत्र लिखिए।

18. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए। (शब्द सीमा 300 शब्द) [5]

(1) मेरा भारत महान
(2) इंटरनेट
(3) दशहरा
(4) एक ऐतिहासिक स्थान की यात्रा

UTKARSH CLASSES

उत्तरमाला मॉडल पेपर – 04

खंड 'अ'

1. **(i) [द]** उपर्युक्त सभी
(ii) [अ] विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना
(iii) [स] अपनी भाषा की
(iv) [अ] जब तक अपनी मातृभाषा को नहीं अपनाता
(v) [द] विदेशी भाषा का
(vi) [स] मातृभाषा को
(vii) [ब] भरत
(viii) [स] कश्यप
(ix) [अ] दुष्यंत
(x) [स] शिशु सिंह
(xi) [स] वीर बालक
(xii) [द] भरत

2. **(i)** भाषा **(ii)** लिपि **(iii)** अभिधा
(iv) लक्षणा **(v)** अनुप्रास **(vi)** श्लेष

3.
(i) **A- Barrier -** अवरोध, नाका **B- Identity -** पहचान
(ii) 'घोषणा' शब्द के लिए पारिभाषिक शब्द है– Declaration
(iii) पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्व समसामयिक घटनाओं की जानकारी शीघ्र देने का है।
(iv) 'सिल्वर वैडिंग' पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य का संबंध किशनदा की मृत्यु से है।
(v) प्रस्तुत कहानी में आधुनिकता के मोह में पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण और मानव-मूल्यों की ह्रास की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।
(vi) यह मराठी ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित एक किशोर के देखे और भोगे हुए यथार्थ की जीवन-गाथा है।
(vii) दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा माने जाते हैं। ये दोनों सिंधु घाटी सभ्यता के परिपक्व दौर के शहर हैं।
(viii) जर्मनी का शासक हिटलर था। उसने गैस-चैंबर व फायरिंग स्क्वायड के माध्यम से लाखों यहूदियों को मौत के घाट उतारा था।
(ix) ऐन फ्रैंक मानती है कि जीवन का सच्चा आनन्द स्वतंत्रता में है और स्वतंत्र रूप से प्रकृति-दर्शन में है।
(x) जिस प्रकार फूल खिलकर अपनी सुन्दरता, सुगन्ध एवं पराग को फैलाकर सभी को आनन्दित-उल्लसित करते हैं, उसी प्रकार कविता भी कल्पनाओं एवं कोमल अनुभूतियों से सभी को आनन्दित कर सन्देश रूपी सुगन्ध फैलाती है।
(xi) लेखक ने भारतीय समाज में बेरोज़गारी और भुखमरी को जाति-प्रथा का कारण बताया है।

खंड 'ब'

4. इन्टरनेट अन्तर-क्रियात्मकता और विश्व के करोड़ों कम्प्यूटरों को जोड़ने वाला ऐसा संजाल है, जो केवल एक टूल अर्थात् उपकरण से सूचनाओं के विशाल भण्डार का माध्यम है। यह सूचना, मनोरंजन, ज्ञान, विज्ञान, व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान का त्वरित माध्यम है।

5. एंकर-बाइट का अर्थ है- कथन। टेलीविजन में किसी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखाकर और सुनाकर समाचारों को प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

6. आधुनिक मानव विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का विनाश कर रहा है। हमारी नदियों और वन संपदा की दशा शोचनीय हो चुकी है। कारखानों का दूषित जल नदियों में छोड़ा जाता है। कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी (बनारस), कोलकाता में गंगा नदी अत्यंत प्रदूषित है। वास्तविकता तो यह है कि इन नदियों का जल अब स्नान करने योग्य भी नहीं रहा है। प्रशासन नदियों के रख-रखाव के लिए करोड़ों रुपये व्यय करता है, परंतु इस धन का अधिकांश भाग नेताओं और अधिकारियों की जेबों में चला जाता है। गंगोत्री जैसे स्थान पर सैकड़ों होटल खुल चुके हैं। वनों की अंधाधुंध कटाई होती है, इससे मौसम में भारी बदलाव आ चुका है। मानव समाज प्रकृति रख-रखाव की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दे रहा है, जिसके परिणामस्वरूप प्रदूषण बढ़ता जा रहा है तथा लोगों में असाध्य रोगों की वृद्धि हो रही है।

7. नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता है। मनुष्य इस मायाजाल को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फँसा रहता है। संसार असत्य है। मनुष्य इसे सत्य मानने की नादानी कर बैठता है और मोक्ष के लक्ष्य को भूलकर संग्रहवृत्ति में पड़ जाता है। इसके विपरीत, कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं जो मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते। अर्थात् संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।

8. छत यद्यपि कठोर होती है, लेकिन बच्चों को यह कठोर नहीं लगती। उन्हें छत मुलायम लगती है क्योंकि वे अपने कोमल पैरों से इधर-उधर भागते रहते हैं, फिर कोमल पैरों में एक थिरकन-सी भर जाती है।

9. आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भाईचारे पर आधारित होगा। सभी को विकास के समान अवसर मिलेंगे तथा जातिगत भेदभाव का नामोनिशान नहीं होगा। समाज में कार्य करने वाले को सम्मान मिलेगा।

10. 'पहलवान की ढोलक' कहानीकार ने कला का स्वतंत्र मूल्य होने का संदेश दिया है। कलाकार कभी भी परमुखापेक्षी नहीं होता। मानवता की साधना करने तथा जीवन-सौन्दर्य की रक्षा के लिए कला की प्रासंगिकता बनाये रखना कलाकार के साथ ही समाज के सभी जनों का भी कर्त्तव्य होता है।

खंड 'स'

11. इस कविता को हम क्रूरता की कविता मानते हैं। यह कविता मीडिया के व्यापार व कार्यशैली पर व्यंग्य करती है। दूरदर्शन कमजोर व अशक्त वर्ग के दु:ख को बढ़ा-चढ़ाकर समाज के सामने प्रस्तुत करता है। वह कमजोर वर्ग की सहायता नहीं करता, अपितु अपने कार्यक्रम के जरिये वह स्वयं को समाज-हितैषी सिद्ध करना चाहता है। अत: यह कविता पूर्णत: मीडिया की क्रूर मानसिकता को दर्शाती है।

अथवा

'सहर्ष स्वीकारा है'- में कवि ने जीवन के सब सुख-दु:ख संघर्ष-अवसाद, उठा-पटक को सम्यक् भाव से अंगीकार करने का संदेश दिया है। जीवन में जो कुछ मनुष्य को प्राप्त होता है वह किसी अज्ञात सत्ता की प्रेरणा से ही प्राप्त होता है। प्रिय के स्नेह की अधिकता से जब कवि का व्यक्तित्व दबने लगता है तो वह उस को भूल जाना चाहता है। कवि का संदेश है कि उस सर्वव्यापक के प्रभाव से बाहर होने की चेष्टा केवल मन को धोखा देना है।

12. नमक ले जाने की बात सोचकर सफ़िया द्वंद्वग्रस्त हो जाती है। उसके भाई ने जब उसे यह बताया कि नमक ले जाना गैरकानूनी है तो वह और अधिक परेशान हो जाती है। चूंकि वह आत्मविश्वास से भरी हुई है इसलिए वह मन में ठान लेती है कि नमक पाकर ही रहेगी। उसमें किसी भी प्रकार का दुराव या छिपाव नहीं है। वह देश प्रेमिका है। दूसरों की भावनाओं का ख्याल वह रखती है, उसमें भावुकता है इसी कारण भाई जब नमक ले जाने से मना कर देता है तो वह रो देती है।

अथवा

'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!' ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। आज मनुष्य में आत्मबल का अभाव हो गया है। अवधूत सांसारिक मोहमाया से ऊपर उठा हुआ व्यक्ति होता है। शिरीष भी कष्टों के बीच फलता-फूलता है। उसका आत्मबल उसे जीने की प्रेरणा देता है। आजकल मनुष्य आत्मबल से हीन होता जा रहा है। वह मानव-मूल्यों को त्यागकर हिंसा, असत्य आदि आसुरी प्रवृत्तियों को अपना रहा है। आज चारों तरफ तनाव का माहौल बन गया है, परंतु गाँधी जैसा अवधूत लापता है। अब ताकत का प्रदर्शन ही प्रमुख हो गया है।

13. कवि का जन्म सन् 1907 में इलाहाबाद में हुआ। उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये प्राध्यापक एवं शिक्षा मंत्रालय में हिन्दी-विशेषज्ञ रहे। ये हालावाद के प्रवर्तक कवि रहे हैं। इन्होंने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता के बजाय सीधी-सादी - जीवंत भाषा में तथा संवेदना से युक्त गेय शैली में अपनी बात कही।

व्यक्तिगत जीवन में घटी घटनाओं की सहज अनुभूति की ईमानदार अभिव्यक्ति बच्चनजी की कविताओं में प्रकट हुई। 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा-निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'आकुल-अंतर', 'मिलन-यामिनी' (काव्य संग्रह); क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर', 'बसेरे से दूर', 'दशद्वार से सोपान' (आत्मकथा); प्रवासी की डायरी (डायरी) इत्यादि का रचित संसार है। इनका निधन सन् 2003 में मुम्बई में हुआ।

अथवा

हिन्दी साहित्य में रेणु आंचलिक उपन्यासकार, कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनका जन्म 4 मार्च, 1921 को बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना में हुआ था। इनका जीवन उतार-चढ़ावों एवं संघर्षों से भरा हुआ था। इनकी प्रमुख रचनाएँ 'मैला आँचल', 'परती-परिकथा', 'दीर्घतपा', 'जुलूस', 'कितने चौराहे' (उपन्यास); 'ठुमरी', 'अग्निखोर', 'रात्रि की महक' (कहानी संग्रह); 'ऋण जल-धन जल', 'वनतुलसी की गंध' (संस्मरण); नेपाली क्रांतिकथा (रिपोर्ताज) आदि हैं। साहित्य के अलावा विभिन्न राजनैतिक एवं सामाजिक आन्दोलनों में भी उन्होंने सक्रिय भागीदारी की। 11 अप्रैल, 1977 को पटना में इनका निधन हुआ था।

14. मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से पूर्व विश्व में मिस्र और मेसोपोटामिया (इराक) की सभ्यता को ही विश्व की सर्वश्रेष्ठ सभ्यता माना जाता था। परन्तु सिंधु सभ्यता की खोज ने इसे विश्व की सर्वोच्च सभ्यता सिद्ध कर दिया है। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो यहाँ की नगर नियोजन कला अपूर्व है। यहाँ की चौड़ी और सीधी सड़कें, पक्की ईंटों के पंक्तिबद्ध मकान (कुछ मकान दो मंजिल के भी बने हैं, जहाँ तक अधूरी सीढ़ियाँ बनी हैं), 'मुअनजोदड़ो' की खुदाई में मिले घरों की सीढ़ियाँ टूट-फूट गई हैं, उन पर होकर मकान के ऊपर तक जाना सम्भव नहीं है। किन्तु ये टूटी और अधूरी सीढ़ियाँ हमें इस सभ्यता के विश्व की सर्वश्रेष्ठ प्राचीन सभ्यता होने का प्रमाण अवश्य उपलब्ध कराती है। दुनिया की छत पर होने का तात्पर्य यही है कि यह संसार की सर्वश्रेष्ठ सभ्यता है। इतिहास में जिन सभ्यताओं का उल्लेख मिलता है, उनसे भी पूर्व यह सभ्यता विकसित हो चुकी थी। हर घर में स्नानागार, कुआँ और जल निकासी के लिए ढकी नालियाँ, रसोईघर, कोठार, उच्चवर्ग या मुखिया का बड़े आँगन और बीस कमरों का मकान और इतर वर्ग के नीचे मकान, स्तूप, महाकुण्ड, जिसके आस-पास स्नानागार बने हैं, आभूषण, औजार, बैलगाड़ी आदि सभी वस्तुओं के कारण सिंधु सभ्यता विश्व की सर्वश्रेष्ठ सभ्यता सिद्ध होती है।

अत: ज्ञात इतिहास जो ईसा से पूर्व चौथी सदी तक जाता है, से पहले भी कोई सभ्यता अपनी श्रेष्ठता के लिए संसार में थी, उसका प्रमाण सिंधु घाटी की खुदाई से मिलता है। इसलिए लेखक का उपर्युक्त कथन सर्वथा उचित एवं समीचीन है।

अथवा

ऐन फ्रैंक एक यहूदी परिवार की लड़की थी। हिटलर के अत्याचारों से उसे भी अन्य यहूदियों की तरह अपना जीवन बचाने के लिए दो वर्ष से अधिक समय तक अज्ञातवास में रहना पडा। इस दौरान उसने अज्ञातवास की पीडा, भय, आतंक , प्रेम, घृणा, हवाई हमले का डर, किशोरावस्था के सपने, अकेलापन, प्रकृति के प्रति संवेदना, युद्ध की पीडा आदि का वर्णन अपनी डायरी में किया है। यह डायरी यहूदियों के खिलाफ़ अमानवीय दमन का पुख्ता सबूत है। इस कारण यह डायरी प्रसिद्ध है।

ऐन समाज में स्त्रियों की स्थिति को अन्यायपूर्ण कहती है। उसका मानना है कि शारीरिक अक्षमता व अधिक कमजोरी के बहाने से पुरुषों ने स्त्रियों को घर में बाँधकर रखा है। आधुनिक युग में शिक्षा के कारण स्त्रियों में भी जागृति आई है। अब स्त्री पूर्ण स्वतंत्रता चाहती है। ऐन चाहती है कि स्त्रियों को पुरुषों के बराबर सम्मान मिले क्योंकि समाज के निर्माण में उनका योगदान महत्त्वपूर्ण है। वह स्त्री–जीवन के अनुभव को अतुलनीय बताती है।

खंड 'द'

15. **संदर्भ-** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित 'उषा' कविता से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि शमशेर बहादुर सिंह हैं।

प्रसंग- कवि ने सूर्योदय से पहले के वातावरण का सुंदर चित्र उकेरा है।

व्याख्या- कवि ने भोर के पल-पल बदलते दृश्य का सुंदर वर्णन किया है। वह कहता है कि सूर्योदय के समय आकाश में गहरा नीला रंग छा जाता है। सूर्य की सफेद आभा दिखाई देने लगती है। ऐसा लगता है मानो नीले जल में किसी गोरी सुंदरी की देह हिल रही हो। धीमी हवा व नमी के कारण सूर्य का प्रतिबिंब हिलता-सा प्रतीत होता है।

कुछ समय बाद जब सूर्योदय हो जाता है तो उषा का पल-पल बदलता सौंदर्य एकदम समाप्त हो जाता है। ऐसा लगता है कि उषा का जादुई प्रभाव धीरे-धीरे कम होता जा रहा है।

विशेष-

(i) कवि ने उषा का सुंदर दृश्य बिंब प्रस्तुत किया है।

(ii) माधुर्य गुण है।

(iii) सरल भाषा का प्रयोग है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत काव्यांश कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'अनामिका' की कविता 'बादल राग' के छठे खण्ड से प्रकाशित है।

प्रसंग- कवि यहाँ बादल का आह्वान क्रांति के रूप में कर रहे हैं । बादल नव जीवन, नव क्रांति के प्रतीक हैं।

व्याख्या- कवि निराला बादलों को क्रांति के प्रतीक बताते हुए नवजीवन का आह्वान कर रहे हैं। वे कहते हैं कि हे क्रांतिकारी बादल, तुम वायु रूपी सागर के वक्षस्थल पर, विचरण करने वाले, कभी स्थिर न रहने वाले सुखों पर दुःख की छाया बनकर मंडराने वाले परिवर्तनकारी बादल हो। निर्दयी विनाशकारी माया के समान जो इच्छाएँ इस संसार में पूरी तरह से प्लावित (फैली) हैं। तेरी युद्ध की नौका मनुष्यों की (उन्हीं) इच्छाओं और आकांक्षाओं से भरी हुई है।

तेरे बादलों की गर्जन से पृथ्वी के हृदय में नवजीवन की आशा लिए हुए, अपना सिर ऊँचा कर जागृत अवस्था के सुप्त अंकुर तेरे इन क्रांति लाने वाले बादलों की ओर ताक रहे हैं। कवि का भाव है कि किसान, मजदूर की आकांक्षाएँ बादलों को नव-निर्माण के रूप में पुकार रही हैं। बादल जनता के लिए परिवर्तन युग प्रवर्तक के रूप में हैं। उनका बरसना, गरजना नवजीवन की सृष्टि करना है।

विशेष-

(i) कवि ने बादलों को क्रांति का प्रतीक बताया है। संसार के दुःखी व निराश हृदय को बादलों की मूसलाधार वर्षा शान्ति-सुख प्रदान करती है।

(ii) शब्द-बिम्बों का प्रयोग, तत्सम प्रधान ओजस्वी शब्दावली, लक्षणा-व्यंजना का प्रयोग हुआ है।

16. **संदर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश लेखक फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित कहानी 'पहलवान की ढोलक' से लिया गया है।

प्रसंग- इसमें लुट्टन पहलवान की जीत की खुशी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- लेखक बताता है कि गाँव के मेले में कुश्ती की प्रतियोगिता चल रही थी, जिसमें लुट्टन पहलवान विजयी घोषित हुआ। जीत की खुशी में लुट्टन कूदता-फाँदता, जोर-जोर से आवाजें निकालता हुआ पहले उन बाजों वालों के पास दौड़ा जो कुश्ती के समय जोर-जोर से ढोल बजा रहे थे। उसने उन ढोलों को प्रणाम किया क्योंकि लुट्टन ने माना कि इन ढोल की तेज आवाजों ने ही उसे उत्साहित व उत्तेजित करके जीत दिलवाई थी।

इसके पश्चात् उसने खुशी से भरकर राजा साहब को अपनी गोद में उठा लिया। राजा साहब के कीमती कपड़े पहलवान के शरीर में लगी मिट्टी से गन्दे हो गए। राजा साहब के मैनेजर ने पहलवान को ऐसा करने से रोकना चाहा, लेकिन राजा साहब ने स्वयं प्रसन्न होकर पहलवान को गले लगा लिया और उसे शाबासी देते हुए कहा कि सच में तुम बहादुर हो, तुमने गाँव की मिट्टी की मर्यादा रख ली।

विशेष-

(i) कुश्ती में जीत से पहलवान और राजा साहब की खुशी का वर्णन है।

(ii) भाषा सरल-सहज एवं बोधगम्य है। 'ताल ठोंकना' और 'मिट्टी की लाज रखना' जैसी कहावतों का प्रयोग हुआ है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश लेखक विष्ण खरे द्वारा लिखित 'चार्ली चैप्लिन यानि हम सब' पाठ से लिया गया है।

प्रसंग- लेखक ने इस प्रसंग में भारतीय कलाओं एवं सौन्दर्य शास्त्र में व्यक्त रसों पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या- चार्ली चैप्लिन की फिल्मों में व्यक्त भावों पर विचार करते हुए लेखक ने कहा है कि भारतीय कलाओं और सौन्दर्यशास्त्र में कई रसों के बारे में विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। उनमें से कुछ रस, ऐसे हैं जो किसी भी कलाकृति में साथ-साथ पाये जाते हैं तो उत्तम माना जाता है। जिस प्रकार जीवन में खुशी और गम आते-जाते रहते हैं, उसी प्रकार एक ही कृति में ये दोनों रस भी मिल सकते हैं। और यह बात संसार की सारी परम्पराओं को मालूम है कि एक साथ दो रसों का होना आश्चर्य नहीं है।

आश्चर्य की बात तो तब होती है जब करुणा अर्थात् दुःख-दर्द का अचानक हास्य या हँसी में परिवर्तित हो जाना रहता है। भारतीय परम्पराओं अर्थात् संस्कृति की किसी भी कलाओं में एक ऐसे अनोखे सिद्धान्त की आवश्यकता की माँग है जिसमें करुण हास्य में तथा हास्य करुणा में बदल जाये। अभी तक तो भारतीय परम्पराओं में ऐसा कोई नियम या सिद्धान्त नहीं बना है।

विशेष-

(i) लेखक ने चार्ली के अभिनय द्वारा सौन्दर्यशास्त्र के रस-सिद्धान्त में आश्चर्यजनक सिद्धान्त की माँग प्रस्तुत की है।

(ii) भाषा सरल-सहज व सारगर्भित है।

17. निविदा-सूचना

राज्यस्तरीय पाठ्य-पुस्तक मण्डल,

झालाना सांस्थानिक क्षेत्र, जयपुर
क्रमांक - लेखा/नि.सू./20XX - 15
दिनांक 12 नवम्बर, 20XX
निविदा संख्या 17/20XX
अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा इस वृत्त के कार्य हेतु निम्न विवरणानुसार सामान की आपूर्ति हेतु प्रतिष्ठित निर्माताओं/ प्रतिष्ठानों से निविदाएँ आमन्त्रित की जाती हैं जो निर्धारित तिथियों को दोपहर दो बजे तक प्राप्त की जायेंगी तथा उसी दिन तीन बजे इच्छुक निविदाकारों के समक्ष खोली जायेंगी। निविदा - प्रपत्र निविदा खोलने की निर्धारित तिथि के 12 बजे तक निविदा शुल्क तथा धरोहर राशि का रेखांकित बैंक ड्राफ्ट लेखा अधिकारी राज्यस्तरीय पाठ्य - पुस्तक मण्डल, जयपुर के कार्यालय में जमा कराकर उपलब्ध किया जा सकता है। निविदा - विवरण इस प्रकार है -

नोट- आपूर्ति के लिए सामग्री का पूरा विवरण निविदा प्रपत्र के साथ उपलब्ध रहेगा।

विवरण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	निविदा खोलने की तिथि	निविदा प्रपत्र-शुल्क
स्टील फर्नीचर की अपूर्ति हेतु	चार लाख रु. लगभग	6000/-	25-01-20XX	60/-
स्टेशनरी आइटम की आपूर्ति हेतु	एक लाख तीस हजार रु. लगभग	3000/-	26-01-20XX	40/-

(हस्ताक्षर)
सचिव

अथवा

प्रेषक -
जिला कलेक्टर
कलेक्टर कार्यालय,
उदयपुर।
प्रेषिति - श्रीमान राजस्व सचिव महोदय,
शासन सचिवालय, राजस्थान सरकार,
जयपुर।
पत्रांक - 28/08/20XX
दिनांक 05 सितम्बर, 20XX
विषय - स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति जारी करने के सम्बन्ध में।
प्रियश्री .....,
आप इस तथ्य से भली - भाँति परिचित हैं कि प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत 'खुला - शौचमुक्त गाँव' कार्यक्रम जिला स्तर पर 'स्वच्छ ग्रामीण मिशन' एवं ग्राम - पंचायतों के माध्यम से चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम हेतु बजट स्वीकृति जारी करने का कष्ट करें, ताकि 'खुला - शौचमुक्त गाँव' कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की गति दी जा सके।
भवदीय
(ह. .....)
वी.एस. पाल
जिला कलेक्टर, उदयपुर

18.

(1) मेरा भारत महान

(i) प्रस्तावना- भारत मेरी मातृभूमि है। इसके अन्न, जल और मिट्टी से मेरे शरीर का भरण-पोषण हुआ है। इसलिए यह देश मुझे प्राणों से भी प्यारा है। यह प्रकृति का लाड़ला देश है। पर्वतराज हिमालय इसके उत्तर में मुकुट की तरह सुशोभित है। दक्षिण में हिंद महासागर इसके चरण धो रहा है। इसके पूर्व में बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में अरब सागर हैं। गंगा और यमुना जैसी नदियाँ इसके हृदय पर हार की तरह शोभा देती हैं। सुंदर कश्मीर हमारे देश का स्वर्ग है।

(ii) भारत के नाम- भारत हमारी मातृभूमि, पितृभूमि, पुण्यभूमि है। भारत ने ही हमारा पालन-पोषण किया है तथा इसके तीर्थ हमारी आस्था और श्रद्धा के स्थल हैं। वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत आदि में स्थापित धर्म भारतीय-धर्म है। प्राचीन काल में यह देश जम्बू द्वीप कहलाता था। सात महान नदियों के कारण इसे सप्तसिन्धु कहा गया था। श्रेष्ठ जन का वास होने के कारण इसका आर्यावर्त नाम पड़ा। परम भागवत ऋषभदेव के पुत्र भरत के सम्बन्ध से भरतखंड और भारत नाम बन गया। भारत के गीत देवता भी गाते थे। विष्णु पुराण के अनुसार स्वर्ग में देवत्व भोगने के बाद देवता मोक्ष-प्राप्ति के लिए भारत में ही मनुष्य रूप में जन्म लिए थे।

(iii) भारत की महान संस्कृति- संसार को आचार, विचार, व्यापार-व्यवहार और ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा-दीक्षा भारत से ही मिली है। क्षमा, करुणा और उदारता की त्रिवेणी सबसे पहले इसी देश में बही है। संयम, त्याग, अहिंसा और विश्वबंधुत्व भारतीय जीवन के आदर्श रहे हैं। सभ्यता का सूर्योदय सबसे पहले इसी देश में हुआ था। विविध कलाएँ यहीं जन्मीं और फली-फूलीं। कृषि विज्ञान, धातु-विज्ञान, औषधि विज्ञान आदि का यहाँ अच्छा विकास हुआ। अजंता और एलोरा की गुफाएँ, दक्षिण भारत के अनोखे मंदिर, आगरे का ताजमहल, दिल्ली का कुतुबमीनार, साँची का स्तूप आदि कला के उत्तम नमूने इसी देश में हैं। दुनियाभर में हजारों लाखों पर्यटक इन्हें देखने के लिए हर साल भारत आते हैं।

एक समय था जब सभी देशों ने भारत को सोने की चिड़िया या स्वर्ण भूमि कहकर इसकी प्रशंसा की है। भारत मानवीय गुणों की प्रेरणा और शिक्षा का एकमात्र केन्द्र है। भारत महामानव-समुद्र कहा जाता था क्यूंकि भारत में जो आता, वह इसका हो जाता। भारत का हिमालय हमारा भाव-प्रतीक है, तो गंगा हमारी माँ है। यहाँ प्रकृति मनोहरता और सौंदर्य अलसा कर बिखर गया है। यह प्रकृति का लाडला देश है।

वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसीदास, कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे अजर-अमर कीर्तिवाले महाकवि भारत में ही पैदा हुए हैं। भारत में रचे गए वेद संसार के आदि ग्रंथ माने जाते हैं।

रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य भारत के ही नहीं, विश्व के गौरव हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, गीता के गायक श्रीकृष्ण, भगवान महावीर, करुणानिधि गौतम बुद्ध, सम्राट अशोक, हर्ष, चंद्रगुप्त, शंकराचार्य, महात्मा गाँधी जैसे महापुरुषों ने अपने अद्भुत कर्मों से इस देश को महान बनाया। कबीर, नानक, नरसी मेहता, मीराबाई तुकाराम, ज्ञानदेव, चैतन्य महाप्रभु, रामकृष्ण परमहंस आदि संतों ने यहाँ भक्ति और ज्ञान की दिव्य सरिताएँ बहाई हैं।

(iv) विविधता में एकता- हमारा देश कभी सांप्रदायिक या संकुचित मनोवृत्ति का नहीं रहा। इसीलिए इस देश में अनेक धर्म पनपे हैं। यहाँ के जनजीवन में विविधता के बावजूद एकता रही है। यह इस देश की महानता का एक विशिष्ट पहलू है।

सदियों तक पराधीन रहने के बावजूद हमारे देश की आत्मा को कोई विदेशी शक्ति कभी नहीं जीत पाई। आज सारा संसार स्वतंत्र भारत की महानता को स्वीकार करता है।

अथवा

(2) इंटरनेट

(i) इंटरनेट का उपयोग- आजकल इंटरनेट हमारे जीवन का एक बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। इसने हमारे व्यक्तिगत जीवन को भी प्रभावित किया है। विविध सोशल नेटवर्किंग साइटों ने हमें अपने मित्रों और संबंधियों से जोड़ दिया है। हम लोग तस्वीरों और संवादों की अविलंब साझेदारी कर सकते हैं। हम लोग विश्व के किसी भाग से उनसे बातें कर सकते हैं।

इंटरनेट ने व्यापार को भी उन्नत किया है। उत्पादों का विज्ञापन बहुत आसान हो गया है। ऑनलाइन खरीदारी, ऑनलाइन भुगतान, टिकटों की बुकिंग, ऑनलाइन बैंकिंग आदि सूचना-प्रौद्योगिकी के ही परिणाम हैं। विश्व के किसी भी भाग में ई-मेल भेजना सेकेंडों की बात रह गई है। वेब कॉन्फ्रेंसिंग, विडियो चैटिंग, ऑनलाइन सेमिनार आदि ने व्यापार को नई ऊँचाइयाँ दी हैं।

किसी सूचना तक पहुँचना अपेक्षाकृत आसान हो गया है। इंटरनेट से छात्र बहुत लाभ उठाते हैं। वे अपने अध्ययन की सामग्रियाँ ऑनलाइन प्राप्त करते हैं। वे अपने अध्ययन-कक्ष में ही विश्व-प्रसिद्ध पुस्तकालयों की पुस्तकें पढ़ सकते हैं।

(ii) इंटरनेट के लाभ- इंटरनेट के कई लाभ होते है। इंटरनेट की सहायता से हम किसी भी प्रकार की जानकारी और किसी भी सवाल का हल एक पल में प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट एक वर्ल्ड वाइड वेब है जिसकी सहायता से हम दुनिया के किसी भी कोने में अपनी मेल या जरूरी दस्तावेजों को पलक झपकते ही भेज सकते हैं और प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट मनोरंजन का एक बहुत अच्छा माध्यम है। इंटरनेट के माध्यम से संगीत, गेम्स, फिल्म आदि को बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के डाउनलोड कर सकते हैं और आनंद उठा सकते हैं।

इंटरनेट की सहायता से बिजली, पानी और टेलीफोन के बिल का भुगतान घर बैठे कर सकते है। इंटरनेट से हमें घर बैठे रेलवे टिकट बुकिंग, होटल रिसर्वेशन, ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन पढ़ाई, ऑनलाइन बैंकिंग, नौकरी, खोज आदि सुविधाएँ मिल जाती हैं। इंटरनेट के माध्यम से आप यू-ट्यूब पर लाइव देखकर कुछ भी सीख सकते हैं। इंटरनेट सेवा के माध्यम से अब ई कॉमर्स और ई बाजार के बढ़ते चलन ने सेवा प्रदाताओं और उपभोक्ताओं के बीच की दूरी को मिटा दिया है।

(iii) इंटरनेट से हानियाँ- जहाँ लाभ होता है वहाँ हानियाँ भी देखने को मिलती है। इंटरनेट पर अधिक सुविधा की वजह से व्यक्तिगत जानकारी की चोरी बढ़ गई है, जैसे- क्रेडिट कार्ड नंबर, बैंक कार्ड नंबर आदि। आज के समय में इंटरनेट का प्रयोग जासूसों के द्वारा देश की सुरक्षा व्यवस्था को भेदने के लिए किया जाने लगा है जो कि सुरक्षा की दृष्टि से खतरनाक है।

इंटरनेट से रेलवे टिकट बुकिंग, होटल रिसर्वेशन, ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन बैंकिंग, नौकरी की खोज आदि सुविधाएँ घर बैठे ही मिल जाती हैं लेकिन इससे पर्सनल जानकारी जैसे आपका नाम, पता और फोन नंबर का गलत उपयोग होने का खतरा भी बना रहता है। आज के समय में गोपनीय दस्तावेजों की चोरी भी होने लगी है।

इंटरनेट पर बहुत ज्यादा निर्भरता हमारे मस्तिष्क को सुस्त बना देता है। हम लोग आलसी हो जाते हैं। इंटरनेट और कंप्यूटरों पर बहुत ज्यादा समय व्यतीत करना विविध स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ावा दे सकता है। ऑनलाइन व्यापार ने पारंपरिक व्यापार को नकारात्मक तरीके से प्रभावित किया है। इन सभी मुद्दों पर विचार किए जाने की जरूरत है।

(iv) इंटरनेट का महत्व- इंटरनेट मनुष्य को विज्ञान द्वारा दिया गया एक सर्वश्रेष्ठ उपहार है। इंटरनेट अनंत संभावनाओं का साधन है। इंटरनेट के माध्यम से हम कोई भी सूचना, चित्र, वीडियो आदि दुनिया के किसी भी कोने से किसी भी कोने तक पल भर में भेज सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से हम ई-मेल आसानी से भेज सकते हैं और प्राप्त भी कर सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से हम अपने विचारों और वस्तुओं का पूरी दुनिया में प्रचार कर सकते हैं। यह विज्ञापन का सबसे सरल और प्रभावी माध्यम है।

इसके बावजूद, हम लोग इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि इंटरनेट ने हम लोगों के जीवन को काफी बदल दिया है। यदि हम इंटरनेट की शक्ति का सकारात्मक तरीके से उपयोग करें तो हम सभी क्षेत्रों में अद्भुत परिणाम पा सकते हैं। इंटरनेट हम सभी के जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है। इससे हमें फायदे और नुकसान दोनों ही प्राप्त होते हैं। हमें सदैव इसका लाभ उठाना चाहिए जिससे हमें इससे फायदा हो सके। इसके कुछ नुकसान भी होते हैं इसलिए हमें इसके नुकसानों से दूर भी रहना चाहिए। जब इंटरनेट हमारी सहायता करता है तो हमें भी इसका नुकसान नहीं करना चाहिए। आज मानव की सफलता के पीछे इंटरनेट का बहुत बड़ा योगदान है।

अथवा

(3) दशहरा

(i) प्रस्तावना- हमारा देश एक त्योहारों का देश है। दशहरा हमारा एक गौरवपूर्ण त्योहार है। यह आश्विन मास में शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाता है। शरद ऋतु के स्वच्छ और मोहक वातावरण में यह त्योहार भारत के जनजीवन को आनंद और उत्साह से भर देता है।

(ii) दशहरे से संबंधित पौराणिक कथाएँ- पौराणिक कथा के अनुसार इसी दिन श्रीराम ने लंका के राजा रावण पर विजय प्राप्त की थी। इस विजय की खुशी सारे देश में मनाई गई थी। इसी दिन की स्मृति में विजयादशमी या दशहरे का त्योहार मनाया जाता है। यह भी मान्यता है कि पांडवों के अज्ञातवास के दौरान इसी दिन अर्जुन ने शमी वृक्ष पर रखा अपना गांडीव धनुष उतारकर दुर्योधन की सेना को भगाया था और राजा विराट की अपहृत गायों को छुड़ाया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार इसी दिन राजा रघु ने देवराज इंद्र पर विजय पाकर उससे ढेर सारी सुवर्ण मुद्राएँ प्राप्त की थीं और उन्हें दान कर दिया था।

(iii) दशहरा त्योहार मनाने का तरीका- मंगल कार्यों का प्रारंभ करने के लिए दशहरे का दिन बहुत शुभ माना जाता है। इस दिन लोग अपने घरों और दुकानों के दरवाजों को तोरणों से सजाते हैं। इस दिन क्षत्रिय अपने घोड़ों को सजाते हैं और शस्त्रों की पूजा करते हैं। लोग अपने औजारों और कल-कारखानों की पूजा करते हैं। किसानों के जीवन में दशहरा नए रंग भर देता है। दशहरे के बाद ही वे रबी की फसल बोने की तैयारी करते हैं। दशहरे के पूर्व नौ दिनों तक सारे देश में रामलीला का आयोजन किया जाता है। दशहरे के दिन रामलीला समाप्त होती है और कागज तथा बाँस से बनाए और बारूद भरे हुए मेघनाद, कुंभकर्ण और रावण के पुतले जलाए जाते हैं। इस प्रकार दशहरा बुराई पर भलाई की तथा अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। इसीलिए इस त्योहार को 'विजयादशमी' कहते हैं।

(iv) दशहरा त्योहार का महत्व- आजकल लोग दशहरे के महत्व को भूलकर बाह्य आडंबर को ही प्रधानता देने लगे हैं। इस दिन कुछ लोग शराब पीते हैं और जुआ खेलते हैं। दशहरे जैसे पवित्र पर्व को सुंदर ढंग से मनाना चाहिए। अपने हृदय को स्वधर्म, स्वदेशप्रेम, बलिदान, तपस्या, दान और वीरता जैसे उत्तम भावों से भर देना ही इस त्योहार को मनाने का सही तरीका है। कहते हैं कि इसी दिन भगवान राम ने रावण का वध किया था और लंका पर विजय पाई थी। इसलिए दशहरे के दिन रावण के पुतले जलाए जाते हैं।

सचमुच, विजयादशमी हमारा राष्ट्रीय, ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व है। दशहरे का त्योहार हमें धर्म, न्याय और मानवता की रक्षा करने तथा हर शुभ कार्य में विजयी बनने का संदेश देता है। लोग दशहरे को बहुत शुभ दिन मानते हैं। मुझे दशहरा का त्योहार बहुत पसंद है।

अथवा

(4) एक ऐतिहासिक स्थान की यात्रा

(i) प्रस्तावना- भारत का इतिहास गौरवपूर्ण है। यहाँ के अनेक ऐतिहासिक स्थान इसके साक्षी हैं। ऐतिहासिक स्थानों की सुंदरता और महत्ता का परिचय उन्हें देखकर ही मिल सकता है। हमने इतिहास में फतेहपुर सीकरी के बारे में बहुत कुछ पढ़ रखा था। हमारे मन में यह ऐतिहासिक स्थान देखने की उत्सुकता जाग उठी और गर्मी की छुट्टियों में हम वहाँ जाने के लिए निकल पड़े।

(ii) सीकरी का बुलंद दरवाजा- सीकरी का बुलंद दरवाजा बहुत ऊँचा है। इसकी रचना इतनी सुंदर है कि देखते ही मुँह से 'वाह', 'वाह' के शब्द अपने आप निकल पड़ते हैं। इसके समीप एक बहुत ही रमणीय सरोवर है। दरवाजे से लगा हुआ शेख सलीम चिश्ती का मकबरा है। कहते हैं, उस फकीर की दुआ से ही बादशाह अकबर को सलीम जैसा होनहार बेटा प्राप्त हुआ था।

(iii) फतेहपुर सीकरी के महल- इस ऐतिहासिक स्थान में पंचमहल, बीरबल का महल और रानी जोधाबाई का महल आदि कई शानदार इमारतें हैं। पंचमहल में पाँच मंजिलें इस तरह बनाई गई हैं कि वे ऊपर की ओर सँकरी तथा नीचे की ओर विस्तृत होती जाती हैं। बीरबल का महल भी बहुत सुंदर है। यह महल उस बीरबल की याद ताजी कराता है, जिसका विनोद अकबर के जीवन का एक अंग बन गया था। जोधाबाई का महल देखते ही हमारे समक्ष भारत के गौरवपूर्ण अतीत का चित्र उपस्थित हो गया।

(iv) दीवाने खास और हिरन मीनार- दीवाने खास की सुंदरता ने भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया। इसमें बादशाह अकबर अपने मंत्रियों से सलाह-मशविरा किया करता था। अकबर यहाँ के पूजागृह में सभी धर्मों के आचार्यों और पंडितों को बुलाकर उनकी धर्म चर्चाएँ सुनता था। हमने हिरन मीनार और हाथी दरवाजा भी देखा। हाथी दरवाजा यहाँ के किले में प्रवेश करते ही दिखाई पड़ता है। सचमुच, द्वार पर बने हाथी अकबर की महत्ता के प्रतीक जैसे लगते हैं।

इस प्रकार फतेहपुर सीकरी की भव्यता के दर्शन करने पर हमारी उत्सुकता शांत हुई। भारतीय इतिहास में बादशाह अकबर हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक हैं। फतेहपुर सीकरी की कला में भी हमने उसी एकता के दर्शन किए।

UTKARSH
CLASSES

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध

QR Code Scan कर आज ही 'उत्कर्ष एप' डाउनलोड करें

Academic Session 2022-23

Class VI-VIII	~~₹10,000~~	₹1999	CBSE | RBSE & Other 7 State Boards
Class IX-X	~~₹15,000~~	₹2999	
Class XI-XII	~~₹18,000~~	₹3499	

₹1200/- per subject	₹600/- per subject
Live	Recorded

Class XI-XII
(Science, Commerce & Arts)

• **LIVE & Recorded Classes** • **English & Hindi Medium**

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर
Utkarsh Online Tuition के साथ

उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com